गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 293
दि. 24.02.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

संसदीय कूटनीति की नई उड़ान: वैश्विक मंच पर भारत का लोकतांत्रिक संवाद

नई दिल्ली। बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत ने कूटनीति के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अब विदेश नीति केवल सरकार और राजनयिक तंत्र तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि संसद भी सीधे तौर पर दुनिया के देशों से संवाद करेगी। इसी उद्देश्य से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने 60 से अधिक देशों के साथ संसदीय मैत्री समूहों का गठन किया है। यह पहल न केवल भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नई मजबूती देगी, बल्कि दुनिया के सामने भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और व्यापकता का भी परिचय कराएगी।

लोकसभा सचिवालय के अनुसार इन संसदीय मैत्री समूहों में विभिन्न दलों के सांसदों को शामिल किया गया है, ताकि विदेश नीति के मुद्दों पर राष्ट्रीय सहमति और एकजुटता का स्पष्ट संदेश दुनिया तक पहुंचे। इन समूहों का मुख्य उद्देश्य सांसदों को अपने विदेशी समकक्षों से सीधे संवाद का अवसर प्रदान करना है। अब भारतीय सांसद केवल अंतर-संसदीय सम्मेलनों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि नियमित और संरचित संवाद के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा देंगे।

यह पहल ऐसे समय में की गई है जब विश्व राजनीति में तेजी से बदलाव हो रहे हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी सहयोग और आपूर्ति श्रृंखलाओं जैसे मुद्दों पर देशों के बीच संवाद और समन्वय अनिवार्य हो गया है। भारत, जो आज दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, अपने संसदीय तंत्र को भी इस वैश्विक विमर्श का सक्रिय भागीदार बनाना चाहता है। संसदीय मैत्री समूह इसी व्यापक सोच का परिणाम हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय और बहुआयामी हुई है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद विभिन्न देशों में बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने की पहल ने यह संकेत दिया था कि भारत राष्ट्रीय हितों के प्रश्न पर राजनीतिक सीमाओं से ऊपर उठकर एकजुट है। अब लोकसभा अध्यक्ष की यह नई पहल उसी नीति का संस्थागत विस्तार मानी जा रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत संवाद की शक्ति में विश्वास करता है और विश्व समुदाय के साथ स्थायी साझेदारी विकसित करना चाहता है।

जिन देशों के साथ संसदीय मैत्री समूह बनाए गए हैं, वे भौगोलिक और रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें श्रीलंका, जर्मनी, न्यूज़ीलैंड, स्विट्ज़रलैंड, दक्षिण अफ्रीका, भूटान, सऊदी अरब, इज़राइल, मालदीव, अमेरिका, रूस, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, सिंगापुर और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश शामिल हैं। इन देशों के साथ भारत के व्यापार, सुरक्षा, ऊर्जा, शिक्षा और सांस्कृतिक संबंध पहले से ही मजबूत हैं। अब संसदीय स्तर पर नियमित संपर्क से इन संबंधों में और गहराई आने की उम्मीद है।

इस पहल का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के वरिष्ठ नेताओं को स्थान दिया गया है। रवि शंकर प्रसाद, पी चिदंबरम, अखिलेश यादव, असदुद्दीन ओवैसी, शशि थरूर, सुप्रिया सुले और अनुराग सिंह ठाकुर जैसे नेताओं की भागीदारी इस बात का संकेत है कि विदेश नीति के मुद्दों पर भारत में व्यापक सहमति है। इससे अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह संदेश भी जाएगा कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था विविधता के बावजूद राष्ट्रीय हितों के प्रश्न पर एकमत है।

विशेषज्ञों का मानना है कि संसदीय कूटनीति पारंपरिक राजनय का पूरक बन सकती है। जब सांसद एक-दूसरे से मिलते हैं, तो वे केवल औपचारिक वार्ताएं नहीं करते, बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर विश्वास और समझ भी विकसित करते हैं। इससे कई जटिल मुद्दों पर संवाद का मार्ग सहज हो जाता है। संसदीय स्तर पर हुए संवाद कई बार सरकारों के बीच औपचारिक बातचीत के लिए आधार तैयार करते हैं।

भारत की यह पहल उसकी वैश्विक महत्वाकांक्षा को भी दर्शाती है। जी-20 की अध्यक्षता से लेकर विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी तक, भारत ने हाल के वर्षों में अपनी उपस्थिति को प्रभावी ढंग से दर्ज कराया है। अब संसदीय मैत्री समूहों के माध्यम से भारत यह दिखाना चाहता है कि उसका लोकतांत्रिक ढांचा भी वैश्विक साझेदारी में योगदान देने के लिए तैयार है।

इसके साथ ही, भारतीय सांसदों को अन्य देशों की संसदीय प्रक्रियाओं और नीतिगत अनुभवों से सीखने का अवसर मिलेगा। यह अनुभव भारत में कानून निर्माण और नीति निर्धारण की प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ बना सकता है। लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं होता, बल्कि निरंतर संवाद और सहभागिता से ही मजबूत होता है। यह पहल उसी भावना को आगे बढ़ाती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आने वाले समय में संसदीय कूटनीति अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक सशक्त स्तंभ बन सकती है। दुनिया भर में लोकतांत्रिक संस्थाएं एक-दूसरे से सीखने और सहयोग करने के नए रास्ते तलाश रही हैं। ऐसे में भारत का यह कदम समयानुकूल और दूरदर्शी माना जा रहा है।

अंततः, 60 से अधिक देशों के साथ संसदीय मैत्री समूहों का गठन केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि भारत की व्यापक कूटनीतिक दृष्टि का हिस्सा है। यह पहल बताती है कि भारत अब वैश्विक मंच पर अधिक सक्रिय, आत्मविश्वासी और संवाद-प्रधान भूमिका निभाना चाहता है। संसदीय कूटनीति की यह नई उड़ान भारत को न केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूती देगी, बल्कि उसके लोकतांत्रिक मूल्यों को भी वैश्विक पहचान दिलाएगी। आने वाले वर्षों में यह पहल भारत के वैश्विक संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है और देश को एक जिम्मेदार, विश्वसनीय तथा प्रभावशाली शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

सूरत: एमएनपी में भ्रष्टाचार के आरोप, स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त अधिकारियों की एसीबी जांच की मांग

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। ऐसा लग रहा था मानो सूरत नगर निगम भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया हो, उच्च पदों पर आसीन अधिकारी लाभ कमाने के लिए अपने पदों का दुरुपयोग करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे, मानो वे सूरत नगर निगम को भ्रष्टों का अड्डा समझते हों, और वे आवेदकों को भुगतान करने के लिए मजबूर करते थे।आवेदकों द्वारा सूरत नगर निगम की सतर्कता शाखा में उक्त अधिकारियों के विरुद्ध कई लिखित शिकायतें किए जाने के बावजूद, सूरत नगर निगम की सतर्कता शाखा ने आज तक कोई कार्रवाई नहीं की है। नगर निगम के अधिकारियों की अक्षमता से तंग आकर, आवेदकों ने अब इस मामले को गंभीरता से लिया है और भ्रष्टाचार विरोधी शाखा (एसीबी) से संपर्क करके नगर निगम के अधिकारियों को कटघरे में खड़ा करने का निर्णय लिया है।

अब हमें इस बात पर चर्चा करनी होगी कि अगर एसीबी द्वारा 2020 से अब तक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाले अधिकारियों की भी जांच की जाए, तो पता चलता है कि इन अधिकारियों ने सूरत शहर के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ विदेशों में भी संपत्तियां बनाई हैं। इतना ही नहीं, उनके पास करोड़ों रुपये के आलीशान बंगले और फ्लैट हैं, महंगी गाड़ियां हैं और उनके बच्चे भारी फीस देकर विदेश में पढ़ाई कर रहे हैं। इन सभी मामलों की गहन जांच होनी चाहिए। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाले अधिकारियों के नाम और पदों सहित ऐसी कई चौंकाने वाली खबरों की विस्तृत रिपोर्ट जल्द ही प्रकाशित की जाएगी और उनका पर्दाफाश किया जाएगा।

विशेष रूप से यह समय की मांग है कि एसीबी उन अधिकारियों की जांच करे जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान बार-बार विदेश दौरे किए हैं और उन कारणों की भी जांच करे जिनके कारण उन्होंने अचानक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली है। साथ ही, यह भी समय की मांग है कि उन अधिकारियों की भी एसीबी द्वारा जांच की जाए जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान भ्रष्टाचार किया है और बैंक लॉकरों के साथ-साथ अनुपातहीन संपत्ति जमा की है, कृषि भूमि और फार्म हाउस के मालिक हैं और विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं, और जो सेवानिवृत्ति के बाद भी सेवानिवृत्त हैं।

अधूरी रह गई एक राजनीतिक यात्रा, सदन में छलका दर्द और उठे अनगिनत सवाल

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति ने बजट सत्र के पहले ही दिन एक ऐसा दृश्य देखा, जिसे लंबे समय तक भुलाया नहीं जा सकेगा। सदन की कार्यवाही सामान्य हंगामे या आरोप-प्रत्यारोप से नहीं, बल्कि भारी मन, नम आंखों और रुंधे गले के साथ शुरू हुई। जब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पूर्व उपमुख्यमंत्री अजित पवार के लिए शोक प्रस्ताव पढ़ना शुरू किया, तो पूरा सदन शोक की गहरी छाया में डूब गया। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच की राजनीतिक दूरियां उस क्षण जैसे समाप्त हो गईं और हर नेता की आवाज में व्यक्तिगत पीड़ा साफ झलकने लगी। यह केवल एक औपचारिक श्रद्धांजलि नहीं थी, बल्कि एक ऐसे नेता को याद करने का क्षण था, जिसकी सक्रियता, प्रशासनिक पकड़ और राजनीतिक कौशल ने दशकों तक राज्य की राजनीति को दिशा दी।

मुख्यमंत्री ने जैसे ही बोलना शुरू किया, उनकी आवाज में भावनाओं का कंपन स्पष्ट था। उन्होंने स्वीकार किया कि यह उनके सार्वजनिक जीवन का सबसे कठिन क्षणों में से एक है। उन्होंने बताया कि उनका और अजित पवार का जन्मदिन एक ही दिन आता था और उम्र में ग्यारह वर्ष बड़े होने के कारण वे हमेशा एक बड़े भाई की तरह रहे। सदन में यह स्वीकारोक्ति सुनते ही माहौल और भी भावुक हो गया। फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र ने केवल एक वरिष्ठ नेता नहीं खोया, बल्कि एक संभावित भविष्य का मुख्यमंत्री भी खो दिया। उन्होंने वित्तीय प्रबंधन में पवार की दक्षता को याद करते हुए कहा कि राज्य की महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिए संसाधन जुटाने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही थी। समय की पाबंदी और काम के प्रति समर्पण का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति हर बैठक में समय से पहले पहुंचता था, उसे नियति ने समय से पहले ही बुला लिया।

विधानसभा अध्यक्ष ने भी घोषणा की कि विधिमंडल परिसर में उनकी स्मृति में एक स्मृतिस्थल बनाया जाएगा, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके योगदान को याद रख सकें। यह घोषणा केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि इस बात का संकेत थी कि उनकी प्रशासनिक शैली और निर्णय क्षमता को एक आदर्श के रूप में देखा जा रहा है। सदन में उपस्थित कई वरिष्ठ सदस्य उस समय अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सके और कुछ क्षणों के लिए कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी।

विधान परिषद में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने जब अपने विचार रखे तो उन्होंने व्यक्तिगत पीड़ा को भी साझा किया। उन्होंने अपने जीवन की एक दुखद घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि संतान को खोने का दर्द क्या होता है, यह वे भली-भांति समझते हैं, इसलिए पवार परिवार के शोक को वे गहराई से महसूस कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अजित दादा केवल एक सहयोगी नहीं थे, बल्कि मार्गदर्शक और बड़े भाई की तरह थे। सरकार में साथ काम करने के दिनों को याद करते हुए शिंदे ने कहा कि पवार की सबसे बड़ी विशेषता थी निर्णय लेने की क्षमता और अधिकारियों को जवाबदेह बनाए रखने की दृढ़ता। वे फाइलों की बारीकियों को तुरंत पकड़ लेते थे और किसी भी तरह की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं करते थे।

पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भी अपने संबोधन में राजनीतिक मतभेदों को दरकिनार कर व्यक्तिगत संबंधों को प्राथमिकता दी। उन्होंने उन्हें एक दिलदार मित्र बताया और कहा कि प्रशासनिक अनुशासन के मामले में वे अत्यंत कठोर लेकिन भीतर से संवेदनशील व्यक्ति थे। ठाकरे ने याद किया कि किस तरह अधिकारी उनके सामने पूरी तैयारी के साथ आते थे क्योंकि उन्हें पता था कि छोटी सी चूक भी उनसे छिप नहीं पाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जो दलगत सीमाओं से परे होते हैं।

सदन में श्रद्धांजलि के साथ-साथ उस विमान हादसे को लेकर भी सवाल उठने लगे, जिसने इस राजनीतिक यात्रा को अचानक विराम दे दिया। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के विधायक रोहित पवार ने जांच प्रक्रिया पर गंभीर चिंता व्यक्त की।

अहमदाबाद: थाईलैंड के लालच में फंसाए गए हाइब्रिड गांजा तस्करी रैकेट का भंडाफोड़, जिसमें 8 करोड़ रुपये मूल्य का माल बरामद हुआ

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

आजकल भारत में साइबर धोखाधड़ी का जाल इतना व्यापक हो गया है कि यह अनुमान लगाना असंभव है कि कौन कब और कहाँ इसका शिकार होगा। ऐसे मामलों में तेजी से हो रही वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है।सवाल यह उठता है कि आधुनिक तकनीक के इस युग में भी साइबर धोखाधड़ी को क्यों नहीं रोका जा सकता? लोग धोखाधड़ी का शिकार होते हैं। वे अपनी जीवन भर की कमाई खो देते हैं। "डिजिटल गिरफ्तारी" जैसे मामलों में पीड़ितों को मानसिक यातना भी सहनी पड़ती है। ऐसे अपराधों पर अंकुश लगाने के प्रयास में केंद्र सरकार ने गृह मंत्रालय के विशेष सचिव की अध्यक्षता में एक अंतर-मंत्रालयी समिति का गठन किया है। समिति ने यह भी कहा है कि अब सीबीआई "डिजिटल गिरफ्तारी" से संबंधित सभी मामलों की जांच करेगी। हालांकि, सरकार का यह कदम तभी कारगर साबित होगा जब साइबर जालसाजों को अपराध करने से पहले ही पकड़ा या रोका जा सके। लेकिन हमारे देश में डिजिटल गिरफ्तारी की घटनाओं में लगातार हो रही वृद्धि और यहां तक कि उच्च शिक्षित लोगों का भी इसमें फंसना चिंता का विषय है।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि सर्वोच्च न्यायालय ने एक आदेश में "डिजिटल धोखाधड़ी" की बढ़ती घटनाओं पर चिंता व्यक्त की थी और कहा था कि सरकार को इससे निपटने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। दरअसल, देश में ऑनलाइन लेनदेन में वृद्धि के साथ-साथ साइबर धोखाधड़ी के मामले भी बढ़ गए हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आम नागरिक, विशेषकर बुजुर्ग, नई तकनीक और ऑनलाइन जोखिमों से अनभिज्ञ हैं। एक छोटी सी गलती से भी धोखेबाज पल भर में लाखों रुपये हड़प सकते हैं। चिंताजनक बात यह है कि साइबर धोखाधड़ी के नए-नए तरीके प्रतिदिन अपनाए जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में, डिजिटल साक्षरता के माध्यम से आम जनता में व्यापक स्तर पर जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। मुद्दा सिर्फ ऐसे मामलों की जांच करना ही नहीं है, बल्कि उन्हें होने से पहले ही रोकना भी है। साइबर अपराधियों को पकड़ने के लिए एक मजबूत तंत्र स्थापित किए बिना, ऐसे मामलों पर पूरी तरह से नियंत्रण पाना संभव नहीं होगा। अब तक सरकार साइबर सुरक्षा के लिए कदम उठा रही है, लेकिन सावधानी बरतने का पूरा भार जनता यानी उपयोगकर्ताओं पर ही है। अब तो हमारे देश में शिक्षित लोग भी इस साइबर धोखाधड़ी के जाल में फंस रहे हैं। तो फिर उन अर्ध-शिक्षित या अशिक्षित लोगों का क्या होगा जिनकी आबादी हमारे देश में बहुत बड़ी है?

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूरे होने के गौरवशाली अवसर के जश्न का संकल्प विधानसभा में पेश किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- वंदे मातरम गीत कभी अप्रासंगिक नहीं होगा
- आजादी के आंदोलन को गति देने का कारण बना वंदे मातरम अब अमृत काल में उसी जोश और जज्बे से विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत के लिए नया प्रेरक बल बनेगा
- गुलामी के कालखंड में रचित वंदे मातरम के शब्द और अर्थ गुलामी की छाया तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि आज भी सुसंगत और प्रासंगिक हैं, वंदे मातरम गीत की हर पंक्ति में भारत माता का अर्थपूर्ण भक्ति गान है
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वंदे मातरम गीत की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में देशव्यापी समारोह के माध्यम से हमें देश के महान नायकों का पुण्य स्मरण और भारत माता की भाव वंदना करने का पुनः अवसर दिया है
- राष्ट्र विरोधी शक्तियों और दुश्मनों का नाश करने वाली भारत माता 'बहुबलधारिणीं' और 'रिपुदलवारिणीं' है

गांधीनगर, 23 फरवरी : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने के गौरवशाली अवसर के जश्न का संकल्प सोमवार को गुजरात विधानसभा में पेश करते हुए साफ कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से देश भर में जिस गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया जा रहा है, उस वंदे मातरम की प्रत्येक पंक्ति में भारत माता का अर्थपूर्ण भक्ति गान है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि वंदे मातरम गीत की ताकत ही इतनी है कि भले ही यह गुलामी के कालखंड में रचा गया हो, लेकिन इसके अर्थ और शब्द गुलामी की छाया तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि आज भी उतने ही सुसंगत और प्रासंगिक हैं कि यह वंदे मातरम गीत कभी अप्रासंगिक नहीं होगा।

उन्होंने स्पष्ट किया कि आजादी के आंदोलन को गति देने का कारण बना वंदे मातरम अब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस अमृत काल में उसी जोश और जज्बे से विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए नया प्रेरक बल बनेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 1875 में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने वंदे मातरम की रचना कर राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र चेतना के साथ स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया था और जन-जन में ऐसा विश्वास जगाया था कि ऐसा कोई संकल्प नहीं है, जो पूरा न हो सके और ऐसा कोई लक्ष्य नहीं है, जिसे हम हासिल न कर सकें। उन्होंने कहा कि हर गीत का अपना एक मूल भाव और मुख्य संदेश होता है। इस वंदे मातरम का विषय भारत माता है। इस गीत में मां भारती की वंदना इस कल्पना के साथ हुई है कि मां भारती की गुलामी के बंधन टूटेंगे और उसके बच्चे ही उसके भाग्य विधाता बनेंगे।

इतना ही नहीं, मूल सभ्यता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता की रक्षा की प्रेरणा के लिए रचित इस गीत से तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की चूलें हिल गई थी और उसने वंदे मातरम गीत पर प्रतिबंध लगा दिया था। उस दौर में वंदे मातरम गाने वालों को जेल में डाल दिया जाता था और उन पर कोड़े बरसाए जाते थे। श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि ऐसे जुल्म के बावजूद वंदे मातरम स्वतंत्रता का जयघोष और लाखों देशवासियों के सपनों के समृद्ध भारत का मंत्र बन गया था।

मुख्यमंत्री ने वंदे मातरम गीत में भारत माता की जल, फल और धन-धान्य से भरपूर, विद्यादायिनी सरस्वती, समृद्धि दायिनी मां लक्ष्मी और अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाली मां दुर्गा के रूप में की गई भक्ति-वंदना का उल्लेख करते हुए वंदे मातरम गीत की रचना से लेकर 1950 में संविधान सभा द्वारा इस गीत को राष्ट्र गान 'जन गण मन' के बराबर दर्जा देने तक के रोमांचक इतिहास का विस्तार से जिक्र किया।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि देश की आजादी के लिए अनेक प्रसिद्ध और गुमनाम सपूत वंदे मातरम का नारा लगाते हुए फांसी के फंदे पर झूल गए थे और सर्वोच्च बलिदान दिया था। इस गीत की प्रेरणा से देशवासियों में भारत माता के लिए कुर्बान होने की भावना और भारत भक्ति उजागर हुई थी। ऐसे त्याग, तपस्या और बलिदान से भारत को गुलामी से स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन दशकों तक मां भारती का उचित सम्मान और गौरव उपेक्षित ही रहा। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश का सेवा दायित्व संभालते ही देशवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्र प्रथम के भाव की चेतना जगी है। उन्होंने विरासत का विशिष्ट सम्मान किया है और 'मेरी मिट्टी-मेरा देश', 'हर घर स्वदेशी-घर घर स्वदेशी', 'हर घर तिरंगा-घर घर तिरंगा' जैसे अभियानों के साथ ही हजारों वर्षों की अटल आस्था और श्रद्धा के पुनर्जागरण के प्रतीक 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के माध्यम से जन-जन में सांस्कृतिक चेतना भी सुदृढ़ की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब दुश्मनों ने उकसाया, तब 'बहुबलधारिणीं' यानी अनेक भुजाओं को धारण करने वाली 'रिपुदलवारिणीं' यानी शत्रु समूह का नाश करने वाली भारत माता ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए उन्हें मुंहतोड़ जवाब देकर समूची दुनिया को हमारे पराक्रम की पराकाष्ठा दिखाई। उन्होंने आगे यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वंदे मातरम गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देशव्यापी समारोह के माध्यम से हमें देश के महान नायकों का पुण्य स्मरण और भारत माता की वंदना करने का पुनः अवसर दिया है।

मुख्यमंत्री ने सदन में सदस्यों के वंदे मातरम के नारों की गूंज के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की एक काव्य रचना का भी गर्व से स्मरण किया, जिसमें श्री मोदी ने वंदे मातरम के प्रति अटल श्रद्धा और राष्ट्र भावना को कुछ इस तरह अभिव्यक्त किया था- "वंदे मातरम केवल एक गीत नहीं, यह हमारी आन, बान और शान है। आजादी के महायज्ञ की आहुति है। राष्ट्रभक्ति की मशाल है। विकास की निरंतर धड़कती अडिग पहचान है। प्रजा जीवन की हर प्रभात की प्रबुद्ध चेतना का स्वर है।"

संपादकीय

कचरे का बोझ

भारत में ठोस कचरा प्रबंधन का प्रश्न आज केवल स्वच्छता या सौंदर्य का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह पर्यावरण, जन-स्वास्थ्य, शहरी नियोजन और आर्थिक विकास से सीधे जुड़ा हुआ एक गंभीर राष्ट्रीय मुद्दा बन चुका है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस विषय पर व्यक्त की गई चिंता इस बात का स्पष्ट संकेत है कि देश में कचरा निस्तारण की समस्या अब एक संकट के रूप में उभर रही है। न्यायालय ने यह स्पष्ट किया है कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में लापरवाही न केवल नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है, बल्कि यह दीर्घकाल में देश की विकास यात्रा को भी बाधित कर सकती है। जब भारत विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य निर्धारित कर चुका है, तब यह अनिवार्य हो जाता है कि बुनियादी नागरिक सुविधाओं का प्रभावी और वैज्ञानिक ढंग से क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। देश के अधिकांश शहरों और कस्बों में कचरे के विशाल ढेर, भरे हुए लैंडफिल और बिना उपचार के फेंका गया अपशिष्ट एक आम दृश्य बन चुका है। महानगरों से लेकर छोटे नगरों तक, कचरा निस्तारण की अपर्याप्त व्यवस्था नागरिकों के लिये गंभीर समस्या पैदा कर रही है। इससे न केवल वायु, जल और भूमि प्रदूषण बढ़ रहा है, बल्कि अनेक संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा भी बढ़ रहा है। खुले में सड़ता हुआ कचरा मच्छरों, मक्खियों और अन्य रोगजनक जीवों के लिये अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, जिससे डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड और अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इस प्रकार, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का प्रश्न सीधे-सीधे सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है।

इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए न्यायालय ने स्थानीय निकायों और निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही तय करने पर जोर दिया है। नगर निगम, नगर परिषद और ग्राम पंचायतों की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने क्षेत्र में कचरा संग्रहण, पृथक्करण और निस्तारण की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित करें। दुर्भाग्य से, कई स्थानों पर इन संस्थाओं द्वारा अपने दायित्वों का समुचित निर्वहन नहीं किया जा रहा है। कचरे का स्रोत पर पृथक्करण, जो कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का सबसे महत्वपूर्ण चरण है, अभी भी व्यापक स्तर पर लागू नहीं हो पाया है। यदि गीले और सूखे कचरे को प्रारंभिक स्तर पर ही अलग कर दिया जाए, तो उसका पुनर्चक्रण और उपचार अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। सरकार द्वारा इस दिशा में कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू की गई हैं, जिनमें अटल मिशन फॉर रिजुवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन और स्मार्ट सिटीज मिशन प्रमुख हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य शहरी बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना और नागरिकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया है। हालांकि, इन योजनाओं के बावजूद जमीनी स्तर पर अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। इसका मुख्य कारण योजनाओं के क्रियान्वयन में कमी, निगरानी का अभाव और जवाबदेही की कमी है। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत में तेजी से हो रहा शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या कचरा उत्पादन में निरंतर वृद्धि कर रही है। जैसे-जैसे लोगों की आय और उपभोग क्षमता बढ़ रही है, वैसे-वैसे अपशिष्ट उत्पादन भी बढ़ रहा है। प्लास्टिक, इलेक्ट्रॉनिक कचरा और पैकेजिंग सामग्री जैसे अपशिष्ट पर्यावरण के लिये विशेष रूप से हानिकारक हैं, क्योंकि उनका प्राकृतिक रूप से विघटन होने में सैकड़ों वर्ष लग सकते हैं। यदि इनका उचित प्रबंधन नहीं किया गया, तो यह समस्या भविष्य में और भी गंभीर रूप ले सकती है। इस संदर्भ में भारत सरकार द्वारा शहरी अवसंरचना में सुधार हेतु बड़े पैमाने पर निवेश की पहल एक सकारात्मक कदम है। लेकिन केवल वित्तीय निवेश ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्रभावी नीति निर्माण, कठोर निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है। स्थानीय निकायों के अधिकारियों और कर्मचारियों को उनके दायित्वों के प्रति संवेदनशील बनाना होगा और लापरवाही के मामलों में कठोर कार्रवाई करनी होगी। न्यायालय द्वारा शून्य सहिष्णुता की नीति पर जोर देना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही, नागरिकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छता केवल सरकार या स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि नागरिक स्वयं कचरा पृथक्करण, पुनर्चक्रण और स्वच्छता के नियमों का पालन करें, तो इस समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। जनजागरूकता अभियान, विद्यालयों में स्वच्छता शिक्षा और सामाजिक संगठनों की भागीदारी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जब तक नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित नहीं होगी, तब तक इस समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है।

भारतीय आकाश को अभेद्य कवच में बदल देंगे Modi Israel से लेकर आएंगे Iron Beam Laser System

> आयरन बीम की सबसे बड़ी विशेषता इसकी लागत है। जहां पारंपरिक मिसाइल अवरोधन में भारी खर्च आता है, वहीं लेजर किरण से किया गया एक अवरोधन मात्र कुछ डॉलर के बराबर पड़ता है। ड्रोन झुंड जैसे हमलों के दौर में यह प्रणाली आर्थिक और सामरिक दोनों दृष्टि से क्रांतिकारी साबित हो सकती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इजरायल दौरा सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। माना जा रहा है कि यह यात्रा भारत की सुरक्षा ढाल की नींव मजबूत करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। हम आपको बता दें कि भारत पहले ही स्वदेशी बहुस्तरीय वायु रक्षा प्रणाली सुदर्शन चक्र के निर्माण में जुटा है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2035 तक प्रमुख शहरों और सामरिक प्रतिष्ठानों को मिसाइल और ड्रोन हमलों से सुरक्षित करना है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा विकसित 30 किलोवाट क्षमता की उच्च ऊर्जा लेजर आधारित निर्देशित ऊर्जा प्रणाली एमके टू ए इस दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन अब भारत की नजर इजरायल की 100 किलोवाट श्रेणी की आयरन बीम प्रणाली पर है, जो आयरन डोम के साथ मिलकर कम दूरी की रॉकेट, मोर्टार और ड्रोन को कुछ ही क्षणों में ध्वस्त कर सकती है। आयरन बीम की सबसे बड़ी विशेषता इसकी लागत है। जहां पारंपरिक मिसाइल अवरोधन में भारी खर्च आता है, वहीं लेजर किरण से किया गया एक अवरोधन मात्र कुछ डॉलर के बराबर पड़ता है। ड्रोन झुंड जैसे हमलों के दौर में यह प्रणाली आर्थिक और सामरिक दोनों दृष्टि से क्रांतिकारी साबित हो सकती है।

हम आपको बता दें कि भारत सुदर्शन चक्र के तहत मध्यम और लंबी दूरी की बराक आठ प्रणालियों, एआई आधारित सेंसर और साइबर सुरक्षा तंत्र को एकीकृत कर रहा है। इसी के साथ इजरायल की एरो और डेविड स्लिंग जैसी दूरवर्ती अवरोधन प्रणालियों के तत्वों को भी समझा जा रहा है, ताकि बहुस्तरीय सुरक्षा कवच तैयार हो सके। देखा जाये तो ऑपरेशन सिंदूर ने स्पष्ट कर दिया है कि भविष्य का युद्ध पारंपरिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहेगा। उस दौरान भारत ने रैम्पेज मिसाइल, हारोप और हार्पी जैसे कामिकाजे ड्रोन तथा स्पाइस एक हजार सटीक मार्गदर्शित बमों का उपयोग कर पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों और सैन्य संपत्तियों को निशाना बनाया था। इन प्रणालियों ने सटीकता, मारक क्षमता और तकनीकी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया था।

हम आपको यह भी बता दें कि फोर्ब्स इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2026 में इजरायल ने भारत के साथ 8.6 अरब डालर के रक्षा सौदों पर सहमति जताई है। इनमें राफेल द्वारा निर्मित स्पाइस एक हजार बम, 250 किलोमीटर मारक क्षमता वाली रैम्पेज वायु से भूमि मिसाइल, एयर लोरा बैलिस्टिक मिसाइल तथा 300 किलोमीटर रेंज वाली आइस ब्रेकर मिसाइल प्रणाली शामिल है। फ्रांस के बाद इजरायल भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता बन चुका है।

हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह यात्रा वर्ष 2017 के बाद इजरायल की दूसरी यात्रा है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने स्पष्ट संकेत दिए हैं कि दोनों देशों के बीच आर्थिक, कूटनीतिक और सुरक्षा सहयोग को नई ऊंचाई दी जाएगी। कनेस्सेट में मोदी का संबोधन इस बढ़ती निकटता का प्रतीक होगा। पिछले नवंबर में रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह की इजरायल यात्रा के दौरान उन्नत तकनीकों के संयुक्त विकास और सह उत्पादन पर सहमति बनी थी। अब प्रस्तावित समझौता ज्ञापन इस सहयोग को और संस्थागत रूप देगा। भारत केवल खरीददार की भूमिका में नहीं रहना चाहता, बल्कि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और स्वदेशी उत्पादन के माध्यम से आत्मनिर्भर रक्षा तंत्र खड़ा करना चाहता है।

देखा जाये तो इजरायल के साथ यह गहन सहयोग दक्षिण एशिया और पश्चिम एशिया के सामरिक समीकरणों को नया आकार देगा। पहला प्रभाव प्रतिरोधक क्षमता में भारी वृद्धि का होगा। यदि आयरन बीम जैसी लेजर प्रणाली सुदर्शन चक्र का हिस्सा बनती है, तो पाकिस्तान की ड्रोन या रॉकेट आधारित रणनीति लगभग निष्प्रभावी हो सकती है। कम लागत में निरंतर अवरोधन की क्षमता दुश्मन के लिए हमले को आर्थिक रूप से भी अलाभकारी बना देगी।

दूसरा प्रभाव मनोवैज्ञानिक होगा। बहुस्तरीय वायु रक्षा कवच से लैस भारत के विरुद्ध आक्रामक कदम उठाने से पहले विरोधी को कई बार सोचना पड़ेगा। यह स्पष्ट संदेश होगा कि भारत अब केवल जवाब नहीं देता, बल्कि पहले से तैयार रहता है।

तीसरा प्रभाव क्षेत्रीय गठजोड़ के रूप में दिखेगा। नेतन्याहू द्वारा प्रस्तावित तथाकथित षटकोणीय गठबंधन, जिसमें भारत, ग्रीस, साइप्रस, अरब और अफ्रीकी देश शामिल हो सकते हैं, कट्टर धुरी के मुकाबले संतुलन की नई धुरी बना सकता है। इससे भारत की पश्चिम एशिया में सामरिक उपस्थिति और ऊर्जा सुरक्षा दोनों मजबूत होंगी।

चौथा प्रभाव तकनीकी आत्मनिर्भरता पर पड़ेगा। एआई, क्वांटम और उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग से भारत का रक्षा उद्योग अगली पीढ़ी की युद्ध प्रणालियों में अग्रणी बन सकता है। इस तरह स्पष्ट है कि यह यात्रा केवल द्विपक्षीय औपचारिकता नहीं, बल्कि भविष्य की युद्धक तैयारी का खाका है। भारत अब रक्षात्मक प्रतिक्रियावादी राष्ट्र की छवि से बाहर निकलकर तकनीकी रूप से सुसज्जित, बहुस्तरीय और आक्रामक प्रतिरोधक शक्ति बनने की दिशा में बढ़ रहा है। बहरहाल, यदि आयरन बीम, एरो, डेविड स्लिंग जैसी प्रणालियों के तत्व सुदर्शन चक्र में समाहित होते हैं, तो भारतीय आकाश एक अभेद्य कवच में बदल सकता है।

प्रेरणा

प्रशंसा को ईश्वर को समर्पित करने की दिव्य भावना

मानव जीवन में प्रशंसा एक अत्यंत सूक्ष्म परीक्षा के समान होती है। यह देखने में सुखद और प्रेरणादायक लगती है, लेकिन इसके भीतर अहंकार का बीज छिपा होता है। जो व्यक्ति इस बीज को पहचान लेता है और उसे अंकुरित होने से पहले ही समर्पण की भूमि में विलीन कर देता है, वही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होता है। भारतीय संस्कृति में समर्पण, विनम्रता और कृतज्ञता को सर्वोच्च गुणों में स्थान दिया गया है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण श्रीराम और भरत के जीवन में देखने को मिलता है, जिनका दिव्य चरित्र रामायण में मानवता के लिए आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भरत का यह भाव कि उनकी प्रशंसा वास्तव में श्रीराम की कृपा का परिणाम है, हमें यह सिखाता है कि सच्चा महान व्यक्ति अपनी उपलब्धियों को स्वयं का नहीं, बल्कि ईश्वर और अपने मार्गदर्शकों का आशीर्वाद मानता है।

जब व्यक्ति प्रशंसा सुनता है, तो उसके भीतर एक सुखद अनुभूति उत्पन्न होती है। यह अनुभूति स्वाभाविक है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने कार्यों की सराहना चाहता है। लेकिन यहीं से एक महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है कि व्यक्ति उस प्रशंसा को अपने भीतर कैसे स्थान देता है। यदि वह उसे अपने अहंकार का आधार बना लेता है, तो यह उसकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधा बन सकती है। अहंकार व्यक्ति को यह भ्रम देता है कि वह स्वयं ही अपने गुणों और उपलब्धियों का निर्माता है, जबकि वास्तविकता यह है कि जीवन में प्राप्त प्रत्येक गुण, अवसर और सफलता के पीछे ईश्वर, गुरु, माता-पिता और समाज का योगदान होता है। भरत ने इस सत्य को गहराई से समझा और यही कारण है कि उन्होंने अपनी प्रशंसा को स्वयं ग्रहण करने के बजाय श्रीराम के चरणों में समर्पित कर दिया। समर्पण का यह भाव केवल धार्मिक या आध्यात्मिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है। जब एक विद्यार्थी सफलता प्राप्त करता है, तो उसमें उसके शिक्षक की शिक्षा और माता-पिता के संस्कारों का योगदान होता है। जब एक कलाकार उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है, तो उसमें उसके गुरु के मार्गदर्शन और निरंतर अभ्यास का परिणाम होता है। जब एक नेता समाज में सम्मान प्राप्त करता है, तो उसमें जनता के विश्वास और सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार, कोई भी व्यक्ति अकेले महान नहीं बनता। महानता हमेशा सामूहिक सहयोग और दिव्य कृपा का परिणाम होती है। इस सत्य को स्वीकार करना ही विनम्रता का आधार है।

विनम्रता व्यक्ति के व्यक्तित्व को स्थिरता और संतुलन प्रदान करती है। यह उसे अहंकार से बचाती है और उसे सच्चे मार्ग पर बनाए रखती है। अहंकार व्यक्ति को अस्थिर बना देता है, क्योंकि वह उसे वास्तविकता से दूर कर देता है। अहंकारी व्यक्ति प्रशंसा के अभाव में दुखी हो जाता है और आलोचना के समय क्रोधित हो जाता है। इसके विपरीत, विनम्र व्यक्ति प्रशंसा और आलोचना दोनों को समान भाव से स्वीकार करता है। वह जानता है कि प्रशंसा उसे प्रेरित करने के लिए है और आलोचना उसे सुधारने के लिए। यही संतुलित दृष्टिकोण व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाता है।

प्रशंसा को समर्पित करने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति अपने गुणों को नकार दे, बल्कि इसका अर्थ यह है कि वह अपने गुणों को ईश्वर की देन के रूप में स्वीकार करे। जब व्यक्ति यह समझता है कि वह केवल एक माध्यम है और उसके माध्यम से ईश्वर कार्य कर रहे हैं, तब उसके भीतर से अहंकार समाप्त हो जाता है। यही भावना उसे सच्चे आनंद और शांति की अनुभूति कराती है। भरत का चरित्र इसी भावना का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने कभी भी स्वयं को महान नहीं माना, बल्कि हमेशा स्वयं को श्रीराम का सेवक और माध्यम माना।

आज के आधुनिक युग में, जहां लोग प्रसिद्धि और प्रशंसा के पीछे भाग रहे हैं, यह शिक्षा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। सोशल मीडिया और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में व्यक्ति अपनी पहचान और सम्मान को बाहरी प्रशंसा से जोड़ने लगा है। यदि उसे प्रशंसा मिलती है, तो वह प्रसन्न होता है, और यदि नहीं मिलती, तो वह निराश हो जाता है। यह स्थिति व्यक्ति को मानसिक रूप से अस्थिर बना सकती है। लेकिन यदि वह भरत की तरह प्रशंसा को समर्पित करना सीख ले, तो वह बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना आंतरिक शांति का अनुभव कर सकता है।

इसके साथ ही, यह भी महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति निंदा को भी सकारात्मक दृष्टि से स्वीकार करे। निंदा व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती है। यह उसे अपने दोषों को पहचानने और उन्हें सुधारने का मार्ग दिखाती है। यदि व्यक्ति निंदा को अपने विकास का साधन बना ले, तो वह निरंतर प्रगति कर सकता है। इस प्रकार, प्रशंसा और निंदा दोनों ही व्यक्ति के विकास में सहायक हो सकते हैं, यदि वह उन्हें सही दृष्टिकोण से देखे।

मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य केवल बाहरी सफलता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आंतरिक शांति और आत्मिक उन्नति प्राप्त करना है। यह तभी संभव है, जब व्यक्ति अपने अहंकार को त्याग कर समर्पण की भावना को अपनाए। समर्पण व्यक्ति को ईश्वर के निकट ले जाता है और उसे सच्चे आनंद का अनुभव कराता है। जब व्यक्ति अपनी प्रशंसा को ईश्वर को समर्पित करता है, तो वह स्वयं को हल्का और मुक्त अनुभव करता है। उसे यह अनुभव होता है कि वह अकेला नहीं है, बल्कि ईश्वर की कृपा उसके साथ है। अंततः, भरत का यह आदर्श हमें यह सिखाता है कि सच्चा भक्त और सच्चा महान व्यक्ति वही है, जो अपनी प्रशंसा को अपने अहंकार का कारण नहीं बनने देता, बल्कि उसे ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देता है। यह समर्पण ही व्यक्ति को अहंकार से मुक्त करता है और उसे सच्ची महानता प्रदान करता है। जब व्यक्ति इस सत्य को अपने जीवन में उतार लेता है, तब उसका जीवन केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। यही समर्पण, यही विनम्रता और यही कृतज्ञता मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

वॉशिंगटन में भारतीय हितों की रक्षा के निहितार्थ

अमेरिका में हमारा आदमी वह नहीं है जिसके बारे में आप अंदाजा लगा सकते हैं, दरअसल, वह उनका सहयोगी है यानि भारत में अमेरिका के राजदूत, सर्जियो गोर। यह शख्स बहुत ज्यादा रोचक है। वे 1986 में उज़्बेकिस्तान के ताशकंद में, बतौर पूर्व सोवियत यूनियन नागरिक पैदा हुए थे (नाम सर्जियो गोरोखोव्स्की रखा गया); एक दशक के अंदर उनका परिवार अमेरिका चला गया, जहां उन्होंने अपना सरनेम छोटा कर लिया। उम्र के चालीस साल पूरे करने से पहले ही श्रीमान गोर न केवल दुनिया के सबसे ताकतवर आदमी, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नज़दीकी बने हुए हैं, बल्कि ऐसा लगता है कि व्हाइट हाउस तक पहुंचने वाले रास्ते की मुश्किलें आसान बनाने में वे भारत की हर संभव मदद कर रहे हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो मेरी बात याद रखिए, अगले गणतंत्र दिवस पर वे एक उच्च पद्म सम्मान के पक्के दावेदार होंगे।

अब श्रीमान गोर की शोहरत का दावा सिर्फ़ उस धमाकेदार खबर पर नहीं टिका है, जो उन्होंने बीते शुक्रवार दिल्ली में ब्रेक की थी, अर्थात, प्रधानमंत्री मोदी और ट्रंप की बहुत जल्द भेंट हो सकती है; यह देखते हुए कि ट्रंप ने अभी हाल ही में कहा है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान '11 बहुत महंगे' लड़ाकू जेट मार गिराए गए थे, भारत निश्चित रूप से इस पर नज़र रखेगा। माना जाता है कि गोर ने भारत के विरुद्ध अड़ियल रवैया अपनाए बैठे अमेरिकी प्रशासन को अंततः व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए मनाया है - और भारत को 50 फीसदी टैरिफ की मुसीबत से राहत दिलवाई है, भले ही हम 5,000 साल पुरानी सभ्यता के वारिस हैं।

इसके अलावा, कहा जा रहा है कि उन्होंने एआई और महत्वपूर्ण खनिजों के मामले पर भारत को अमेरिका के नेतृत्व वाले वैश्विक संगठन, 'पैक्स सिलिका' में प्रवेश पाने में भी मदद की है; मत भूलिए कि अमेरिकियों ने दो महीने पहले, दिसंबर में, इसी संगठन में भारत के लिए दरवाज़े बंद करवा दिए थे। (तो हृदय परिवर्तन की वजह क्या है?)

अब आप दलील देंगे कि यह सब तो आमतौर पर होता रहता है, कि यह तो गोर का काम है कि वह स्थानीय लोगों, मतलब हम भारतीयों के साथ ,तालमेल बनाकर रखें – और यहां पर मैं यह शब्द सोच-समझकर सलाह के रूप में उपयोग कर रही हूं, क्योंकि आपने अब तक वह पढ़ लिया होगा जो गोर के काफी ताकतवर साथी, अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने एक हफ्ते से भी कुछ पहले म्यूनिख सिक्योरिटी कॉन्फ्रेंस में कहा था। यह भाषण 'ईसाई आस्था' और 'पश्चिमी सभ्यता' जैसे विशेषणों से भरा हुआ था– और कक्ष में मौजूद सभी राजनेता, जिनमें से अधिकांश गोरे थे, उन्होंने जोश में तालियां बजाईं। यह और बात है कि इन्हीं में से कई लोग लगातार अलग-अलग रंगों की त्वचा वाले लोग– भूरे, काले, पीले– जोकि भारत और चीन जैसे तीसरी दुनिया के देशों में रहते हैं, उनके साथ व्यापार समझौते करने की कोशिशें कर रहे हैं, क्योंकि बाजार वहीं पर हैं। म्यूनिख में रुबियो के अनुसार, 'हमें अपनी राष्ट्रीय सीमाओं पर भी नियंत्रण करना होगा। यह नियंत्रण कि कौन और कितने लोग हमारे देशों में आते हैं, यह कोई ज़ेनोफ़ोबिया (परदेसियों का भय) दिखाना नहीं है। यह नफ़रत नहीं है। यह राष्ट्रीय प्रभुसत्ता का एक बुनियादी काम है'।

आपको क्यूबाई मूल के अमेरिकी की अमेरिका के झंडे 'स्टार्स एंड स्ट्राइप्स' को लहराने की तीव्र या कुछ हद तक बेताब इच्छा की खातिर अवश्य ही तारीफ करनी होगी, किंतु विडंबना पर ध्यान दें। मार्को का क्यूबाई नागरिकता वाला परिवार उस वक्त तक अमेरिकी नागरिक नहीं बना था, जब 1971 में वे पैदा हुए थे। लेकिन, एक ताकतवर अमेरिकी विदेश मंत्री श्रीमान रुबियो ऐसा रुख अपना रहे हैं जो भविष्य के सुंदर पिचाई जैसों को अमेरिका में पैर जमाने की कोशिश करने में अड़चन बनेगा (भारत अपने 'सुंदर पिचाइयों' को घर पर ही क्यों नहीं रोककर रख सकता है, यह एक अच्छा और अलग सवाल है)।

फिर मुक्त व्यापार की वह दलील जिसे पश्चिमी जगत सोवियत यूनियन के पतन और शीत युद्ध खत्म होने के बाद से आगे बढ़ा रहा है — यह मानना पड़ेगा कि इसी ने भारत को अपनी जटिल नीति में सुधार करने और वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने के लिए मजबूर किया था — और दक्षिणी गोलार्ध के मुल्कों ने अपने बाजार खोलने की एवज में, श्रमिकों के मुक्त आवागमन की मांग की थी। अर्थात सबसे काबिल लोगों को उस जगह पर जाने की मुक्त आवाजाही की सहूलियत होनी चाहिए जहां जॉब्स हो ; महज पासपोर्ट के रंग के आधार पर उनके साथ भेदभाव न हो। क्योंकि पिछले साल ट्रंप ने मुक्त व्यापार की दलील को निरस्त कर दिया था, अब उनके विदेश मंत्री नए समझौते के प्रारूप को अंतिम रूप दे रहे हैं — हमारे सामान के लिए अपना बाज़ार खोलो, लेकिन हमसे यह उम्मीद मत रखो कि तुम्हारे लोगों की नौकरियों के लिए हम अपनी अर्थव्यवस्था खोलेंगे।

रुबियो के म्यूनिख वाले भाषण के सबसे खास हिस्से के लिए जरा रुकिए। 'कोलंबस के युग के बाद से, 1945 में पहली बार, पश्चिम सिकुड़ रहा था बड़े पश्चिमी साम्राज्य अपने पूर्ण पतन के दौर में पहुंच गए थे, जिसको नास्तिक वामपंथी आंदोलन और औपनिवेशीकरण विरोधियों ने और गति दी और आने वाले सालों में दुनिया के नक्शे के एक बड़े हिस्से को दरांती-हथौड़े वाले लाल झंडे से ढांप दिया'।

रुबियो की बातों से आपको गुस्सा आ सकता हैं, लेकिन बेहतर होगा कि गहरी सांस लेकर सोचें। कम से कम अब हम जानते हैं कि ट्रंप समर्थक असल में हमारे बारे में क्या सोचते हैं — एशिया और अफ्रीका भर में चले हमारे स्वतंत्रता आंदोलनों के बारे में, भारत की भांति उपनिवेश रहे देशों के लोगों द्वारा उन पश्चिमी ताकतों की सेवा में लड़े गए युद्धों के बारे में, जिन्हें उन्होंने अपनी बस्ती बना रखा था।

अभियान

त्याग, आस्था और लोकविश्वास का विराट उत्सव: खाटू श्याम की महिमा

राजस्थान की मरुभूमि जब फाल्गुन के रंग में रंगती है, तब सीकर जिले का एक छोटा-सा कस्बा आस्था के महासागर में बदल जाता है। दूर-दूर से उमड़ती भीड़, "हारे का सहारा खाटू श्याम हमारा" और "लखदातार की जय" के गूंजते स्वर, भक्ति गीतों की मधुर धुन और दीपों की पंक्तियों से आलोकित पवित्र परिसर—यह सब मिलकर एक ऐसे आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करते हैं, जिसका अनुभव शब्दों में समेटना कठिन है। यही वह समय होता है जब श्री खाटू श्याम मंदिर में फाल्गुनी लक्खी मेले का भव्य आयोजन होता है। लगभग साढ़े तीन सौ वर्षों से अधिक पुरानी यह परंपरा आज भी उसी श्रद्धा और उल्लास के साथ निभाई जा रही है। लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति के कारण इसे 'लक्खी मेला' कहा जाता है और खाटू श्याम को प्रेम से 'लखदातार' की उपाधि दी जाती है।

इस विराट आस्था की जड़ें महाभारत काल की उस अद्वितीय कथा में निहित हैं, जो वीरता, वचनबद्धता और परम त्याग का संदेश देती है। बर्बरीक, महाबली भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र थे। उनकी माता नागकन्या अहिलवती थीं। बचपन से ही उनमें असाधारण शौर्य और तपस्या का भाव था। उनकी साधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें तीन अमोघ बाण प्रदान किए, जबकि अग्निदेव ने उन्हें दिव्य धनुष दिया। इन तीन बाणों की शक्ति ऐसी थी कि वे तीनों लोकों का संहार कर सकते थे। इसी कारण वे 'तीन बाणधारी' के नाम से विख्यात हुए। जब महाभारत का महान युद्ध आरंभ हुआ, तो बर्बरीक भी अपने दिव्य अस्त्रों के साथ युद्धभूमि की ओर प्रस्थान कर गए।

युद्धभूमि में उनकी भेंट श्रीकृष्ण से हुई। श्रीकृष्ण ने उनसे उनकी शक्ति और प्रतिज्ञा के विषय में पूछा। बर्बरीक ने स्पष्ट कहा कि वे युद्ध में सदैव उस पक्ष का साथ देंगे, जो कमजोर होगा। यह वचन उनकी करुणा और न्यायप्रियता का प्रतीक था, किंतु इसके परिणाम अत्यंत गंभीर हो सकते थे। यदि वे युद्ध में उतरते, तो उनकी शक्ति बार-बार पक्ष बदलने को बाध्य करती और अंततः पांडवों की पराजय निश्चित हो जाती। श्रीकृष्ण का उद्देश्य धर्म की स्थापना करना था, इसलिए उन्होंने एक कठिन किंतु आवश्यक निर्णय लिया। उन्होंने बर्बरीक से दान में उनका शीश मांग लिया। बर्बरीक ने बिना किसी हिचक के अपना शीश अर्पित कर दिया। यह त्याग केवल शारीरिक बलिदान नहीं था, बल्कि अपने पराक्रम और संभावित विजय का भी त्याग था।

कथा के अनुसार, श्रीकृष्ण ने उनके शीश को श्यामकुंड में प्रवाहित किया और उन्हें आशीर्वाद दिया कि कलियुग में वे उनके नाम से पूजे जाएंगे। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी को श्यामकुंड में उनके शीश के प्रकट होने की मान्यता है। अगले दिन द्वादशी को उसी शीश की स्थापना मंदिर के रूप में की गई। इसी ऐतिहासिक और पौराणिक स्मृति के सम्मान में हर वर्ष फाल्गुनी लक्खी मेले का आयोजन होता है। यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि उस त्याग की स्मृति है जिसने धर्म की विजय सुनिश्चित की।

'लक्खी' शब्द राजस्थानी भाषा में लाखों की संख्या को दर्शाता है। मेले के दौरान प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। भक्तों का विश्वास है कि खाटू श्याम उनके जीवन के दुख-दर्द दूर करते हैं और उन्हें नई आशा प्रदान करते हैं। इसी विश्वास के कारण उन्हें 'हारे का सहारा' कहा जाता है। जो व्यक्ति जीवन के संघर्षों से थककर निराश हो जाता है, वह यहां आकर आश्वस्त होता है कि कोई अदृश्य शक्ति उसकी पीड़ा समझ रही है और उसे सहारा दे रही है। यह विश्वास ही इस तीर्थस्थल की सबसे बड़ी शक्ति है।

मंदिर में दर्शन की एक विशेष परंपरा है। भक्तों को बाबा के दर्शन के लिए तेरह सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। इन सीढ़ियों का धार्मिक महत्व माना जाता है। श्रद्धालु विश्वास करते हैं कि इन सीढ़ियों को पार करते हुए वे अपने जीवन की बाधाओं को पीछे छोड़ते हैं और सीधे बाबा से नेत्र-संपर्क स्थापित करते हैं। हाथ में मयूर पंख और गुलाब का फूल अर्पित करना शुभ माना जाता है। आरती और भजन की गूंज से मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण में डूब जाता है। विशेष रूप से फाल्गुनी मेले के दौरान मंदिर के द्वार चौबीसों घंटे खुले रहते हैं, ताकि दूर-दूर से आए श्रद्धालु निर्बाध रूप से दर्शन कर सकें।

खाटू श्याम की कथा केवल राजस्थान तक सीमित नहीं है। हरियाणा के हिसार जिले के बीड़ गांव में बर्बरीक के धड़ की स्थापना है, जहां 'श्याम बाबा मंदिर' स्थित है। पानीपत के समीप चुलकाना धाम को वह स्थान माना जाता है, जहां उन्होंने अपना शीश दान किया था। इस प्रकार उनकी कथा और पूजन परंपरा अनेक स्थानों से जुड़ी हुई है, जो उनकी व्यापक लोकप्रियता और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है। फाल्गुनी लक्खी मेला केवल आध्यात्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक समागम भी है। यहां राजस्थान की लोक परंपराएं, भक्ति संगीत और पारंपरिक परिधान एक साथ दिखाई देते हैं। श्रद्धालुओं की सेवा के लिए भंडारे, चिकित्सा शिविर और सुरक्षा व्यवस्था की व्यापक तैयारियां की जाती हैं। स्थानीय प्रशासन और स्वयंसेवी संगठन मिलकर इस विशाल आयोजन को सफल बनाते हैं। यह आयोजन सामाजिक सहयोग और सामूहिक आस्था का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

खाटू श्याम धाम तक पहुंचने की व्यवस्था भी सरल है। रींगस निकटतम रेलवे स्टेशन और बस अड्डा है, जो दिल्ली और जयपुर से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। रींगस से मंदिर की दूरी लगभग पंद्रह किलोमीटर है, जिसे भक्त ई-रिक्शा, बस या पैदल यात्रा से तय करते हैं। विशेष रूप से फाल्गुनी मेले के समय अनेक श्रद्धालु पैदल यात्रा को ही वरीयता देते हैं, जिसे वे भक्ति और तपस्या का रूप मानते हैं। रास्ते भर भजन-कीर्तन और जयकारों से वातावरण गूंजता रहता है।

बर्बरीक का त्याग हमें यह सिखाता है कि सच्ची वीरता केवल युद्ध जीतने में नहीं, बल्कि धर्म और सत्य के लिए स्वयं को समर्पित करने में है। उनका जीवन संदेश देता है कि जब व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक कल्याण के लिए निर्णय लेता है, तभी वह अमर हो जाता है। खाटू श्याम की पूजा इसी त्याग की स्मृति है। श्रद्धालुओं की आस्था इस बात का प्रमाण है कि त्याग और समर्पण कभी व्यर्थ नहीं जाते; वे कालांतर में लोकविश्वास और भक्ति का आधार बन जाते हैं।

आज के युग में, जब जीवन की गति तेज और चुनौतियां जटिल होती जा रही हैं, खाटू श्याम की कथा लोगों को मानसिक और आध्यात्मिक संबल प्रदान करती है। यहां आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ आशा, विश्वास और संतोष लेकर लौटता है। यही कारण है कि फाल्गुनी लक्खी मेला केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जन-जन के विश्वास का उत्सव है। यह आयोजन हमें याद दिलाता है कि त्याग, आस्था और समर्पण ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। बर्बरीक के अमर बलिदान से लेकर आज के श्रद्धालुओं की अटूट श्रद्धा तक, खाटू श्याम धाम एक जीवंत परंपरा का प्रतीक है, जो सदियों से लोगों के हृदय में विश्वास की ज्योति प्रज्वलित कर रही है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से इस्कॉन के संस्थापक आचार्य श्रील प्रभुपादजी की गुजराती में प्रकाशित जीवनी 'विश्वगुरु श्रील प्रभुपाद' का अनावरण

अक्षयपात्र द्वारा प्रतिदिन गुजरात के 5 लाख सहित देशभर के 23.5 लाख बच्चों को पष्टिक भोजन परोसा जाता है : हरे कृष्ण मूवमेंट के वाइस चेयरमैन श्री चंचलापति दास

गांधीनगर : भारतीय अध्यात्म एवं वैदिक ज्ञान को विश्व पटल पर गुंजायमान करने वाले अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ (इस्कॉन) के संस्थापक आचार्य श्रील प्रभुपादजी के प्रेरणादायी जीवन चरित्र पर गुजराती में प्रकाशित पुस्तक 'विश्वगुरु श्रील प्रभुपाद' का भव्य अनावरण समारोह सोमवार को गांधीनगर में आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से इस पुस्तक का अनावरण किया गया।

यह पुस्तक देश के 'आध्यात्मिक राजदूत' श्रील प्रभुपादजी के असाधारण संघर्ष, उनकी वैश्विक आध्यात्मिक यात्रा तथा विश्वभर में भारतीय संस्कृति के प्रसार में उनके अमूल्य योगदान को उजागर करती है।

श्रील प्रभुपादजी के जीवन चरित्र पर आधारित इस पुस्तक के अनावरण अवसर पर अभिनंदन देते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि श्रील प्रभुपादजी की यात्रा संघर्षों से भरी हुई थी, परंतु श्री कृष्ण पर उनके अटूट विश्वास ने उन्हें अपार सफलता दिलाई। आम आदमी जब मुश्किल में हार जाता है, तब भगवद् गीता के संदेश के माध्यम से मिला दृढ़ विश्वास ही जीवन का सच्चा मार्ग बताता है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि श्रील प्रभुपादजी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सिक्का एवं पोस्टल स्टाम्प जारी कर प्रभुपादजी के वैश्विक प्रभाव को सम्मानित किया गया था।

इस पुस्तक की लेखिका डॉ. उषाबेन उपाध्याय को अभिनंदन देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. उषाबेन ने श्रील प्रभुपादजी के जीवन चरित्र का गुजराती में वर्णन कर राज्य की जनता तक उनके प्रभावशाली विचारों को पहुँचाने का भगीरथ कार्य किया है।

श्रीमद् भगवद् गीता में दिए गए संदेश के विषय में वर्णन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्कृष्ट व्यावहारिक जीवन जीने के लिए गीता की महिमा अनिवार्य है। श्री कृष्ण के जीवन प्रसंगों द्वारा समझाया गया कि अधर्म का नाश निश्चित है। हमारे लिए केवल धीरज एवं आंतरिक शांति बनाए रखना जरूरी है। श्री राम के आचरण तथा श्री कृष्ण के वचनों को जीवन में उतार कर मोक्ष की ओर मार्ग सरल बनता है।

उन्होंने कहा कि इस्कॉन द्वारा विश्वभर में

भौतिकता के पीछे दौड़ने वाले नागरिकों को अध्यात्म की ओर मोड़ने का जो कार्य हुआ है, वह अद्भुत है। विदेशी भक्त जिस प्रकार सर्वस्व त्यागकर कृष्ण भक्ति में लीन होते हैं, वह उनके संपूर्ण समर्पण का प्रमाण है। यह पुस्तक गुजरात के युवाओं से लेकर प्रत्येक पीढ़ी के लिए वरदानस्वरूप सिद्ध होगी। इस प्रकार; मुख्यमंत्री ने श्रील प्रभुपादजी के विरल व्यक्तित्व एवं विश्वभर में कृष्ण भक्ति के प्रसार में उनके योगदान की प्रशंसा की।

ग्लोबल हरे कृष्ण मूवमेंट के को-मेंटोर तथा वाइस चेयरमैन श्री चंचलापति दास ने श्रील प्रभुपादजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रील प्रभुपाद ने 70 वर्ष की

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- आम आदमी जब मुश्किलों में हार जाता है, तब भगवद् गीता ही जीवन का सच्चा मार्ग बताती है
- श्रील प्रभुपादजी की 150वीं जयंती पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सिक्का तथा पोस्टल स्टाम्प जारी कर प्रभुपादजी के वैश्विक प्रभाव को किया गया सम्मानित
- यह पुस्तक गुजरात के युवाओं से लेकर हर पीढ़ी के लिए वरदानस्वरूप सिद्ध होगी

आयु केवल 40 रुपए के साथ कारगो जहाज में अमेरिका जाकर हरे कृष्ण मंत्र को विश्वव्यापी बनाया। समुद्री यात्रा के दौरान दो बार हृदयाघात सहन करने के बावजूद वे गुरु की आज्ञा का पालन करने में दृढ़ रहे। उनके प्रयासों से ही विश्वभर में 108 से अधिक कृष्ण मंदिरों की स्थापना हुई है।

इस अवसर पर श्री दास ने अक्षयपात्र के सेवायज्ञ कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन तथा अक्षयपात्र फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों का स्मरण किया। प्रधानमंत्री ने गुजरात में वर्ष 2007 में मुख्यमंत्री के रूप में इस्कॉन को गुजरात में सेवा करने के लिए निमंत्रण दिया था और गांधीनगर में एक साधारण शेड में अक्षयपात्र के रसोई घर का उद्घाटन कर अपने करकमलों से बच्चों को भोजन परोसकर इस सेवायज्ञ का प्रारंभ कराया था।

श्री चंचलापति दास ने कहा कि आज अक्षयपात्र गुजरात के 5 स्थानों पर प्रतिदिन 5 लाख बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान करता है। समग्र भारत में यह आँकड़ा 23.5 लाख बच्चों तक पहुँचा है। उन्होने आशा व्यक्त की कि इस पुस्तक द्वारा गुजरात के नागरिक श्रील प्रभुपाद के संघर्षमय जीवन तथा भक्ति मार्ग के अधिक निकट आएंगे।

इस पुस्तक की लेखिका डॉ. उषाबेन उपाध्याय ने कहा कि श्रील प्रभुपाद का जीवन अप्रतिम साहस, धैर्य एवं मानव जाति के प्रति असीम करुणा का जीवंत उदाहरण है। श्रील प्रभुपाद ने 69 वर्ष की वयोवृद्ध आयु में पश्चिम की भौतिकवादी संस्कृति में कृष्ण भक्ति के बीज रोपे थे। उन्होंने केवल धर्म का प्रचार ही नहीं किया, बल्कि व्यसनों में डूबे युवाओं को वैदिक संस्कारों के माध्यम से एक नैतिक समाज की रचना की थी। विश्वभर में 108 मंदिर की स्थापना तथा रूस या अफ्रीका जैसे विषम भौगोलिक वं राजनीतिक क्षेत्रों में भी 'हरे कृष्ण' महामंत्र गुजायमान करना उनकी अकल्पनीय उपलब्धि है।

डॉ. उपाध्याय ने कहा कि श्रील प्रभुपाद ने केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि अक्षयपात्र जैसी सेवा द्वारा भूखों को भोजन कराकर मानवता का सच्चा धर्म सिखाया है। आज जब भारत के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है, तब श्रील प्रभुपाद ने दशकों पूर्व ही एक 'आध्यात्मिक राजदूत' के रूप में भारत की सनातन संस्कृति को विश्वभर में विख्यात किया था।

हरे कृष्ण मूवमेंट, अहमदाबाद द्वारा आयोजित इस पुस्तक अनावरण समारोह में शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, इस्कॉन हरे कृष्ण मंदिर, अहमदाबाद के अध्यक्ष श्री जगन्मोहन कृष्ण दास, साहित्यकार श्री भाग्येश झा सहित विद्वान, शिक्षाविद् तथा महानुभाव बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

गुजरात में भारतीय रेलवे के रिकॉर्ड निवेश से अवसंरचना विकास को नई रफ्तार

17,366 करोड़ का ऐतिहासिक आवंटन: कनेक्टिविटी और सुरक्षा का होगा विस्तार,सुरक्षा, बुलेट ट्रेन और आधुनिक स्टेशनों से राज्य में रेल परिवहन का नया युग

भारतीय रेलवे ने गुजरात में रिकॉर्ड बजटीय आवंटन और तीव्र अवसंरचना विकास के माध्यम से रेल परिवहन के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 17,366 करोड़ के ऐतिहासिक बजट आवंटन के साथ राज्य में आधुनिक, सुरक्षित और यात्री-केंद्रित रेल नेटवर्क के विकास को अभूतपूर्व गति मिली है।

वर्ष 2009–14 के दौरान गुजरात के लिए औसत वार्षिक रेल बजट आवंटन 589 करोड़ था, जो वर्ष 2026–27 में बढ़कर 17,366 करोड़ हो गया है। यह लगभग 29 गुना वृद्धि राज्य में कनेक्टिविटी, क्षमता विस्तार और रेल अवसंरचना को मजबूत करने की दिशा में सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

- गुजरात में वर्तमान में 1,28,748 करोड़ की लागत से रेलवे अवसंरचना परियोजनाएं प्रगति पर हैं। इनमें नई रेल लाइनों का निर्माण, स्टेशनों का पुनर्विकास तथा प्रमुख सुरक्षा उन्नयन शामिल हैं, जो दीर्घकालिक क्षमता वृद्धि और परिचालन दक्षता सुनिश्चित करेंगे।
- डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के अंतर्गत पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और पंजाब को

जोड़ता है। सूरत में पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर को जोड़ा जाएगा तथा वहां एक महत्वपूर्ण जंक्शन विकसित किया जाएगा।

- यह पूर्व–पश्चिम कॉरिडोर गुजरात के पश्चिमी तट के बंदरगाहों को देश के विभिन्न राज्यों से जोड़ेगा। इसके माध्यम से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश को भी बेहतर कनेक्टिविटी प्राप्त होगी।
- गुजरात ने 100% रेल विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल कर लिया है। राज्य में 87 स्टेशनों पर निर्माण कार्य जारी है। अहमदाबाद–मुंबई हाई-स्पीड रेल (बुलेट ट्रेन) परियोजना तीव्र गति से प्रगति कर रही है। दूसरी सुरंग की ब्रेकथ्रू प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण होगी तथा व्यावसायिक संचालन अगले वर्ष प्रारंभ करने का लक्ष्य निर्धारित है। प्रधानमंत्री के सतत मार्गदर्शन और नियमित समीक्षा के अंतर्गत टीम निरंतर कार्यरत है।
- बुलेट ट्रेन परियोजना देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें आधुनिक निर्माण तकनीक, उन्नत प्रौद्योगिकी और विशेष ट्रैक प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है।
- अमृत स्टेशन योजना के तहत गुजरात के 87 रेलवे स्टेशनों को 6,058 करोड़ की लागत से व्यापक पुनर्विकास हेतु चिन्हित किया गया है। इनमें से 19 स्टेशनों- सामाख्याली, डाकोर, हापा, जाम जोधपुर, मोरबी, ओखा, पालीताना और पोरबंदर सहित का पुनर्विकास कार्य पूर्ण हो चुका है। इससे यात्री सुविधाओं और स्टेशनों की सौंदर्यात्मक गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- आधुनिक ट्रेन सेवाओं की शुरुआत से गुजरात में यात्रियों की सुविधा और यात्रा दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्तमान में राज्य में संचालित हैं:
- 6 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें
- 1 अमृत भारत एक्सप्रेस
- 1 नमो भारत एक्सप्रेस
- ये सेवाएं यात्रियों को तेज़, सुरक्षित और अधिक आरामदायक यात्रा विकल्प प्रदान कर रही हैं।
- वर्ष 2014 के बाद से गुजरात के रेलवे नेटवर्क का तीव्र विस्तार हुआ है। लगभग 2,900 किलोमीटर नई रेलवे लाइनें बिछाई गई हैं, जो कई यूरोपीय देशों के कुल रेल नेटवर्क से अधिक है। राज्य में 4,005 किलोमीटर रेल मार्गों का 100% विद्युतीकरण पूर्ण हो चुका है, जिससे हरित और ऊर्जा-कुशल संचालन सुनिश्चित हुआ है।
- इसके अतिरिक्त, लेवल क्रॉसिंग समाप्त करने के उद्देश्य से 1,177 फ्लाईओवर और अंडरपास बनाए गए हैं, जिससे सुरक्षा में वृद्धि और सड़क-रेल यातायात में सुगमता आई है।
- रेल सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भारतीय रेलवे गुजरात में स्वदेशी 'कवच' ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम लागू कर रहा है। स्वीकृत 1,842 रूट किलोमीटर में से 96 रूट किलोमीटर पर 'कवच' स्थापित किया जा चुका है, जबकि 1,674 रूट किलोमीटर पर कार्य प्रगति पर है। यह रेल सुरक्षा मानकों में महत्वपूर्ण उन्नति को दर्शाता है।

रिकॉर्ड निवेश, आधुनिक स्टेशन, प्रीमियम ट्रेन सेवाएं, पूर्ण विद्युतीकरण और उन्नत सुरक्षा प्रणालियों के साथ भारतीय रेलवे गुजरात के अवसंरचना विकास और समग्र सामाजिक-आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों को संरक्षा में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रदीप कुमार ने पश्चिम रेलवे मुख्यालय, मुंबई में आयोजित समारोह में अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों को रेल संरक्षा में उत्कृष्ट कार्य, सतर्कता एवं सुरक्षित ट्रेन संचालन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए "मैन ऑफ द मंथ" (जनवरी–2025) संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। इन कर्मचारियों की सजगता एवं त्वरित कार्रवाई से संभावित दुर्घटनाएँ टलीं तथा रेल संपत्ति और यात्री सुरक्षा सुनिश्चित हुई।

श्री रवि प्रकाश शर्मा, पॉइंट्समैन – कटोसन रोड

दिनांक 19.01.2026 को श्री रवि प्रकाश शर्मा, पॉइंट्समैन कटोसन रोड स्टेशन पर एल.सी. संख्या 29 पर ड्यूटी पर कार्यरत थे। गाड़ी संख्या IFFCO/MB एल.सी. संख्या 29 से गुजर रही थी। 'ऑल राइट' सिग्नल मिलाते समय उन्होंने देखा कि ब्रेकवान से नौवें वैगन में एक हैंगिंग पार्ट बाहर लटका हुआ है। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए उन्होंने तत्काल खतरे का लाल संकेत प्रदर्शित किया तथा ड्यूटी पर तैनात स्टेशन मास्टर को सूचित किया। स्टेशन मास्टर ने लोको पायलट से संपर्क कर गाड़ी को पुनः कटोसन रोड स्टेशन पर रुकवाया। जांच के दौरान वैगन में हैंगिंग पार्ट पाया गया, जिसे सुरक्षित रूप से बांध दिया गया। इसके उपरांत आवश्यक

कार्यवाही सुनिश्चित की गई।

श्री चंद्रपाल सिंह, टेक्नीशियन ग्रेड-II, टीआरडी डिपो – महेसाणा

दिनांक 10.01.2026 को श्री चंद्रपाल सिंह, टेक्नीशियन ग्रेड-II, टीआरडी डिपो महेसाना द्वारा आंबलियासन–जगुदन खंड के मध्य ओएचई सेक्शन की फुट पेट्रोलिंग के दौरान कैटेनरी वायर ड्रॉपर क्लिप का बोल्ट ढीला पाया गया, जो किसी भी समय खुल सकता था। यदि समय रहते इस दोष की पहचान नहीं की जाती, तो पैंटोग्राफ के उलझने से ओएचई में गंभीर खराबी उत्पन्न हो सकती थी, जिससे रेल यातायात बाधित होने के साथ-साथ गंभीर सुरक्षा जोखिम भी उत्पन्न हो सकता था। श्री चंद्रपाल सिंह द्वारा समय पर दोष की पहचान एवं सुधारात्मक कार्रवाई से एक बड़ी तकनीकी खराबी एवं संभावित दुर्घटना को टाल दिया गया।

पश्चिम रेलवे को अपने ऐसे कर्तव्यनिष्ठ एवं सजग कर्मचारियों पर गर्व है, जो यात्रियों की सुरक्षा एवं रेल संचालन की विश्वसनीयता बनाए रखने में निरंतर योगदान दे रहे हैं। ऐसे सराहनीय प्रयास रेलवे में संरक्षा संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ करते हैं।

सोना वायदा में 2817 रुपये और चांदी वायदा में 12190 रुपये का ऊछालः क्रूड ऑयल वायदा 21 रुपये फिसला

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 162253.42 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 26485.12 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 135764.25 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39784 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2027.1 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 21459.88 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 158458 रुपये के भाव पर खूलकर, 160600 रुपये के दिन के उच्च और 158117 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 156876 रुपये के पिछले बंद के सामने 2817 रुपये या 1.8 फीसदी की बढ़त के साथ 159693 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 1326 रुपये या 1.05 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 127978 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 228 रुपये या 1.43 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 16140 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी मार्च वायदा 155770 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 157936 रुपये और नीचे में 155770 रुपये पर पहुंचकर, 2852 रुपये या 1.84 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 157455 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 157627 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 158985 रुपये और नीचे में 156736 रुपये पर पहुंचकर, 155553 रुपये के पिछले बंद के सामने 2035 रुपये या 1.31 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 157588 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 263061 रुपये के भाव पर खूलकर, 268875 रुपये के दिन के उच्च और 260028 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 252944 रुपये के पिछले बंद के सामने 12190 रुपये या 4.82 फीसदी की तेजी के संग 265134 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 12439 रुपये या 4.89 फीसदी की तेजी के संग 266920 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11698 रुपये या 4.6 फीसदी की मजबूती के साथ 265899 रुपये प्रति किलो बोला गया।

मेटल वर्ग में 3361.41 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 2.9 रुपये या 0.25 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1171.05 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 1.6 रुपये या 0.49 फीसदी की तेजी के संग 327.9 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 90 पैसे या 0.29 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 308.15 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 10 पैसे या 0.05 फीसदी की नरमी के साथ 187.65 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1570.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा 6093 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 6093 रुपये और नीचे में 5960 रुपये पर पहुंचकर, 21 रुपये या 0.35 फीसदी औंधकर 6036 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 18 रुपये या 0.3 फीसदी की गिरावट के साथ 6036 रुपये प्रति बैरल के

- कमोडिटी वायदाओं में 26485.12 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 135764.25 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 21459.88 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39784 पॉइंट के स्तर पर

भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 287.2 रुपये के भाव पर खूलकर, 289.9 रुपये के दिन के उच्च और 281.2 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 282.2 रुपये के पिछले बंद के सामने 1 रुपये या 0.35 फीसदी की तेजी के संग 283.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 50 पैसे या 0.18 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 283.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 956 रुपये पर खूलकर, 3.6 रुपये या 0.38 फीसदी घटकर 952 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 11183.07 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 10276.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2730.19 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 203.30 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 26.25 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 393.63 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 543.19 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 996.64 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 4.23 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.57 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8843 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 68751 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 33221 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 424361 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 63626 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 10408 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 16611 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 60784 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17092 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 22602 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 39885 पॉइंट पर खूलकर, 39905 के उच्च और 39570 के नीचले स्तर को छूकर, 1041 पॉइंट बढ़कर 39784 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मार्च 6000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 11.8 रुपये की गिरावट के साथ 367.4 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.1 रुपये की बढ़त के साथ 21.35 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 95 रुपये की बढ़त के साथ 382 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 106.5 रुपये की बढ़त के साथ 453 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.34 रुपये की बढ़त के साथ 17.69 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 372.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 33 पैसे की नरमी के साथ 0.79 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मार्च 6000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 10 पैसे के सुधार के साथ 324.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 5 पैसे की नरमी के साथ 23.1 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 339 रुपये की गिरावट के साथ 292 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 240000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1941.5 रुपये की गिरावट के साथ 545 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.34 रुपये की गिरावट के साथ 11.17 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3 पैसे के सुधार के साथ 6.99 रुपये हुआ।

मंडल रेल प्रबंधक द्वारा पोरबंदर रेलवे स्टेशन एवं संबंधित रेल खंड का व्यापक निरीक्षण

दिनांक 21 फरवरी, 2026 (शनिवार) को मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर मंडल श्री दिनेश वर्मा द्वारा पोरबंदर रेलवे स्टेशन एवं संबंधित रेल खंड का विस्तृत निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने धोला, जेतलसर जंक्शन, धोराजी, उपलेटा, जाम जोधपुर, राणावाव तथा पोरबंदर रेलवे स्टेशनों का निरीक्षण कर रेल परिचालन, संरक्षा व्यवस्था एवं यात्री सुविधाओं का गहन अवलोकन किया।

निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने पोरबंदर यार्ड में प्रगति पर चल रहे यार्ड रीमॉडलिंग कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी कार्य निर्धारित गुणवत्ता मानकों एवं संरक्षा नियमों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए समय-सीमा के भीतर शीघ्र पूर्ण किए जाएं, जिससे रेल परिचालन क्षमता में वृद्धि हो तथा यात्रियों को बेहतर एवं सुरक्षित सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

इस अवसर पर पोरबंदर रेलवे स्टेशन पर नवनिर्मित अधिकारियों के विश्राम गृह (ORH — Officers' Rest House) का उद्घाटन भी मंडल रेल प्रबंधक द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि आधुनिक सुविधाओं के विकास से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बेहतर कार्य वातावरण प्राप्त होगा, जिससे रेल सेवाओं की गुणवत्ता एवं कार्य दक्षता में सकारात्मक सुधार होगा। निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत मंडल रेल प्रबंधक द्वारा जेतलसर जंक्शन से पोरबंदर के मध्य स्थित स्टेशनों का विशेष संरक्षा निरीक्षण भी किया गया। इस दौरान ट्रैक संरचना, सिग्नलिंग प्रणाली, प्लेटफॉर्म व्यवस्था, यात्री सुविधाओं एवं सुरक्षा प्रबंधों की विस्तृत समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

अपने निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने, स्टेशन परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने तथा यात्री सुविधाओं में सतत सुधार सुनिश्चित करने हेतु निरंतर प्रयास करने पर विशेष बल दिया।

पश्चिम रेलवे
निर्माण कार्य

मंडल रेल प्रबंधक (WA), पश्चिम रेलवे, छठी मंजिल, इंजीनियरिंग विभाग, मुंबई सेंट्रल, मुंबई - 400 008। ई-निविदा अधिसूचना क्रमांक बीसीटी/25-26/316 दिनांक 17/02/2026 को आमंत्रित करता है। कार्य और स्थान: (1) सूरत - नए ट्रिप शेड का निर्माण (विद्युत भाग सहित संयुक्त निविदा) (2) उधना - प्लेटफार्म क्रमांक 6 पर कवर, शौचालय ब्लॉक, बैठने की व्यवस्था और अन्य न्यूनतम आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना। कार्य की अनुमानित लागत: रु. 20,58,44,062.20/- ईएमडी: रु.11,79,200/- जमा करने की तिथि और समय: 17.03.2026 को 15:00 बजे तक। खुलने की तिथि और समय: 17.03.2026 को 15:30 बजे। 1138

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – दाहोद

टेंडर नोटिस संख्या – EL81-1-2025-26-19RT, दिनांक : 20.02.2026, कार्य का नाम : रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप दाहोद एवं कालिडैम पंप हाउस का एनर्जी ऑडिट। पता : सहायक परियोजना प्रबन्धक (बिजली), सी साइट, फ्रीलैंडगंज, दाहोद–389160 (गुजरात), कार्य की अनुमानित लागत : ₹ 5,09,760/-, ई–टेंडर जमा करने व खुलने की तिथि व समय : Submission Up to 15.00 Hrs on 16.03.2026 and the tenders will be opened at 15.30 Hrs on the same day. The Tender Notice and documents uploaded on the website www.ireps.gov.in / E-Tenders / Works / IR Electrical by this office. ADM/7/1/474

Follow us on: twitter.com/WesternRly

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

विकसित भारत
गुजरात बजट 2026-27
विकसित गुजरात

गुजरात का अब तक का

सबसे बड़ा बजट

₹4 लाख 8 हजार 53 करोड़

‘अनिंग वेल, लिविंग वेल’ के लक्ष्य को साकार करता

राज्य सरकार का सर्वग्राही एवं सर्व-समावेशी दृष्टिकोण

पंचस्तंभ – सामाजिक सुरक्षा, मानव संसाधन विकास, इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाएं,
आर्थिक गतिविधियों का विकास और ग्रीन ग्रोथ पर आधारित बजट।

स्वर्णिम जयंती मुख्यमंत्री शहरी विकास योजना के लिए

₹16,116 करोड़ का प्रावधान

दक्षिण गुजरात, मध्य गुजरात, उत्तर गुजरात,
सौराष्ट्र व इसके तटीय क्षेत्र और कच्छ, इन 6 क्षेत्रों के लिए

₹2000 करोड़ का प्रावधान

“सब के लिए अपना घर” के संकल्प को साकार करने हेतु
विभिन्न आवास योजनाओं के अंतर्गत लगभग 3.15 लाख से
अधिक आवासों के निर्माण के लिए

₹4272 करोड़ का प्रावधान

25 GIDCs को आधुनिक तकनीक से स्मार्ट बनाने हेतु

**₹1250 करोड़ का प्रावधान, साथ ही,
₹50 करोड़ के निवेश से**

120 मिनी GIDC के नवीनीकरण।

“प्रधानमंत्री जन आरोग्य-मुख्यमंत्री
“अमृतम योजना” योजना के लिए

₹3472 करोड़ का प्रावधान

नमो शक्ति एक्सप्रेस-वे तथा
सोमनाथ द्वारका एक्सप्रेस-वे परियोजना के लिए अतिरिक्त

₹3000 करोड़ का प्रावधान

VB-G RAM G यानी विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) योजना से ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि एवं रोजगार हेतु कार्य दिवस 100 से बढ़ाकर 125 किए गए हैं, **जिसके लिए ₹1500 करोड़ का प्रावधान**

सामाजिक न्याय, आदिवासी तथा शिक्षा विभाग के लगभग
97 लाख विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के लिए ₹5967 करोड़ का प्रावधान

निर्यात क्षेत्र को और गति व व्यापकता देने के लिए
गुजरात स्टेट एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (GEPC) की स्थापना का निर्णय

कृषि यंत्रीकरण के विभिन्न उपकरणों की खरीद में सहायता हेतु
₹1565 करोड़ का प्रावधान

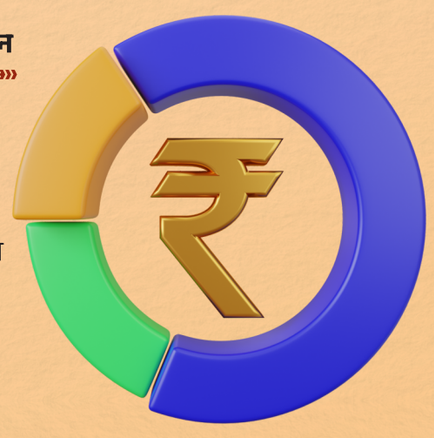

महिलाओं द्वारा संचालित स्वरोजगार गतिविधियों को विस्तार देने के लिए
₹47 करोड़ का प्रावधान।

छोटे शहरों में भी बड़े शहरों जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने और वहाँ रोजगार के नए अवसर सृजित हों,
इसके लिए 5 नए सैटेलाइट टाउन कलोल, साणंद, सावली, बारडोली तथा हीरासर के विकास की योजना

मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए **₹5600 करोड़ का प्रावधान**

अत्याधुनिक परिवहन सुविधा के लिए लगभग 2,463 नई बसें (जिनमें से 500 एसी इलेक्ट्रिक बसें होंगी)
चलाई जाएंगी। साथ ही आदिवासी एवं औद्योगिक क्षेत्रों में 500 मिडी बसें भी संचालित की जाएंगी।
इसके लिए **₹1,286 करोड़ का प्रावधान**

गुजरात पुलिस के लिए डाटा फ्यूज़न सेन्टर और सेन्टर ऑफ एक्सिलेंस फॉर AI इन पुलिसिंग की स्थापना की जाएगी।
इस परियोजना के लिए **₹60 करोड़ का प्रावधान किया गया है**

आश्रमशालाओं और ग्रांट-इन-एड छात्रावासों में अध्ययनरत आदिवासी, अनुसूचित जाति,
विकसति जाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को दी जाने वाली मासिक सहायता में
₹340 की वृद्धि कर उसे ₹2,500 करने का निर्णय लिया गया है

**“'गरवी गुजरात' की प्रगति को नई गति देने वाला यह ऐतिहासिक बजट 2026-27
नागरिक जीवन के हर पहलू को स्पर्श कर उसे सशक्त बनाएगा और
सभी को विकास के समान अवसर प्रदान करेगा।”**

- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात